REVELATION 14 SERIES, STUDIES #1 THRU #5, by Chris McCann: Hindi

Revelation 14 Series, Study #1 by Chris McCann, originally aired August 12, 2014 **Hindi**

प्रकाशितवाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 1 से 5, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारन 12 अगस्त 2014

नमस्कार! इंटरनेट बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 1 है और जैसे जैसे हम आगे बढतें है हम प्रकाशितवाक्य के किताब में हम हर पद का अध्ययन करेंगे। इस अध्याय में जाते समय हम देखेंगे कि वह मुख्य रूप से न्याय के दिन पर केन्द्रित है (इस अध्ययन में कुछ पदों को शामिल करने पर), उसका आरंभ सीयोन पर्वत पर प्रभु यीशु मसीह के दृश्य से होता है। प्रकाशित वाक्य 14:1 में लिखा है :

फिर मैं ने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौवालीस हजार जन हैं, जिन के माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है।

परमेश्वर हमारे सामने जो प्रतिमा रखता है वह न्याय के दिन के कुछ समय पहले होती है क्योंकि 1,44,000 कलीसिया के युग से समानता रखता है, परंतु हम इसकी ओर देखें। जब प्रभु यीशु ने प्रेरित यूहन्ना को यह दर्शन दिया, तो वहां लिखा है : "**फिर मैं ने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है**" अब मैं जानता हूं कि इंटरनेट बाइबल के सभी श्रोता जानते हैं कि बाइबल में मेम्ना मसीह का प्रतीक है, परंतु हमारे पास कुछ नए श्रोता हो सकते हैं जो इससे परिचित नहीं हैं, और उन्हें (हमें भी) हमेशा यह स्मरण दिलाना बेहतर है क्योंकि बाइबल "स्मरण दिलाए जाने" के विषय में कहती है, भले ही आप उन्हें जानते हों। प्रभु हमें इस विषय में 1पतरस में या 2 पतरस में बताता है। (कभी कभी एक ही नाम की जब 1 और 2 पुस्तक होती है, तो मैं उलझन में पड़ जाता हूं, परंतु यह इनमें से एक पुस्तक में है।) परिचित बातों का पुनरावलोकन करना हमारे लिए अच्छा है और उन बातों का जिन्हें हम जानते हैं और उनमें से एक बात यह है कि यीशु को बाइबल में मेम्ना कहा गया है, जैसा कि यूहन्ना 1:29 में लिखा है :

दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।

उसी तरह, यूहन्ना 1:36 में लिखा है :

और उस ने यीशु पर जो जा रहा था दृष्टि करके कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि यीशु को "परमेश्वर का मेम्ना" के रूप में जाना गया है और कहा गया है। उसे मेम्ना नाम दिया गया है क्योंकि वह पाप का बलिदान और अर्पण है जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए दिया है, जैसे कि बलिदान की विधि के माध्यम से होने वाले प्रायश्चित के कार्य को दर्शाने वाली व्यवस्था इस्राएल को देकर, परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति के आरंभ से मसीह के प्रायश्चित के कार्य का चित्र प्रस्तुत किया, और इसलिए कई जानवरों का बलिदान किया गया और – हजारों मेम्ने मारे गए और उनमें से हर एक मसीह ने जगत की उत्पत्ति से जो कुछ किया था और समय में क्या करेगा इसका प्रतीक या चित्र या प्रात्यक्षिक है, जैसा कि यूहन्ना 1, उल्लेख करता है कि प्रभु यीशु ने 1 ली सदी में और अपनी सेवकाई के साढ़े तीन वर्षो में मानव इतिहास में प्रवेश किया। अंत में, वह उन बातों को प्रगट करने के लिए क्रूस पर जाने वाला था जो जगत की उत्पत्ति से पहले उसने की थीं। इसलिए प्राणियों के बलिदान (विशेषकर मेम्ने) के विषय में परमेश्वर ने जो व्यवस्थाएं दी थी, वे सभी प्रभु यीशु मसीह के बलिदान की ओर संकेत करते हैं; वह परमेश्वर का मेम्ना है। वह एक मेम्ना नहीं, परंतु परमेश्वर का मेम्ना है।

यह मेम्ना 1,44000 के साथ सीयोन पर्वत पर देखा जाता है। परमेश्वर सीयोन पर्वत पर क्यों देखा जाता है? सीयोन पर्वत एक अत्यंत दिलचस्प नाम है जिसका उपयोग परमेश्वर यरूशलेम के लोगों का या यहूदियों का या उसके चुने हुए लोगों के लिए करता है। सीयोन पर्वत इन सभों का प्रतिनिधित्व करता है और भजनसंहिता में कई वचन हैं जहां पर सीयोन पर्वत का उल्लेख है, इसलिए हम उनमें से कइयों को देखेंगे।

हम भजन 2:6 से आरंभ करेंगे :

मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूं।

प्रकाशितवाक्य 14, वचन 1 के हमारे वचन में बिल्कुल यही परिस्थिति है। मेम्ना सीयोन पर्वत पर खड़ा रहा और मेम्ना मसीह है और मेम्ना राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है, इसलिए वह सीयोन पर्वत पर राजा है। भजन 2:7 में यूं लिखा है :

मैं उस वचन का प्रचार करूंगाजो यहोवा ने मुझ से कहा :, तू मेरा पुत्रा है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ।

इसलिए सीनै पर्वत का राजा मसीह और इस तथ्य के बीच में संबंध है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। बाइबल के अनुसार यीशु परमेश्वर का पुत्र कैसे बना? उसे रोमियों 1, वचन 4 के अनुसार **मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।**

वह मरे हुओं में से जी उठा और इस तरह परमेश्वर का पुत्र घोषित किया गया। मुर्दो में से जी उठना परमेश्वर को क्यों प्रेरित करता है कि वह उसे परमेश्वर का पुत्र घोषित करें? इसका कारण यह है कि बाइबल हमें बताती है कि वह मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा है। मरे हुओं में से जीवित होने वालों में वह पहला है और जगत की उत्पत्ति के समय से वह उसके लोगों के पापों के लिए मर गया। उसने मृत्युदण्ड की वह कीमत चुकता की जिसने परमेश्वर के सारे चुने हुओं के लिए व्यवस्था की मांग को संतुष्ट किया और वह पूर्ण रूप से अदा होने के बाद, मसीह मुर्दो में जी उठा। जब वह जीवित हुआ, तब वह पुत्र, पहलौठा घोषित किया गया था, परंतु यह ऐसा नहीं था मानो वह अस्तित्व में नहीं था और फिर अस्तित्व में आया, जैसे लोगों के विषय में सच है; हम जन्म लेते हैं और पुत्र बनते हैं (यदि हम पुरुष है) और हमारा अस्तित्व आरंभ होता है। परंतु मसीह के मामलें में, इसका यह अर्थ नहीं है। उसे पुत्र घोषित किया गया क्योकि वह मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा। प्रभु यीशु हमेशा परमेश्वर था। वह यूहन्ना 1:1 के अनुसार वचन था, जो हमें बताता है :

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।

प्रभु यीशु मसीह सनातन अतीत से अस्तित्व में है। वह त्रिएक परमेश्वर है, परंतु उसने पुत्र का नाम धारण किया और यह हमारे लिए आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए, क्योंकि बाइबल मसीह को कई नाम देती है। परमेश्वर के कई नाम उसके विषय में एक गुण, विशेषता या सत्य को प्रगट करते हैं। "परमेश्वर का पुत्र" यह नाम इस सत्य को प्रगट करता है कि वह मुर्दो में से पहले जन्मा था। निःसंदेह, यह महत्वपूर्ण है कि बाइबल हमें बताती है कि पुत्र ने संसार को बनाया, जैसा कि इब्रानियों अध्याय 1 में लिखा है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह इस बात का सकारात्मक प्रमाण है कि यीशु को पहले मरना पड़ा और संसार को उत्पन्न करने वाले पुत्र के रूप में घोषित किए जाने के लिए मुर्दो में से जी उठना पड़ा। यदि वह पहले ही मरे हुओं में से जी न उठा होता, तो उसे पुत्र नहीं कहा जा सकता था (जिसने संसार को उत्पन्न किया)। कुछ लोग परमेश्वर के वचन के विरोध में आग्रह करते हैं और वे बाइबल जो कहती है उससे विवाद करते हैं और वे हठिलेपन से यह कहते रहते हैं, "अरे नहीं, यीशु पापों के लिए सन् 33 में मर गया," और फिर भी बाइबल स्पष्ट है कि वह जगत की उत्पत्ति के समय से मर गया। याद रखें कि प्रकाशित वाक्य 13:8 में लिखा है :

और पृथ्वी के वे सब रहने वाले जिन के नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।

यहां पर परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत के पापों को हर लेता है और हमारे एकलौते उद्धारकर्ता के रूप में और अपने सारे चुने हुए लोगों के पापों के लिए दण्ड देने वाले एकलौते के रूप में किस क्षण मसीह मर गया? यह जगत की उत्पत्ति के समय हुआ। मैं यह अपने मन से नहीं कह रहा हूं। बाइबल ऐसा कहती है। उस क्षण परमेश्वर का मेम्ना मसीह मारा गया। वह यह नहीं कहता कि वह सन् 33 से या पहली सदी से मारा गया। परमेश्वर स्पष्ट रूप से यह दर्शाने के लिए ऐसा कह सकता था कि मसीह के पृथ्वी के जीवन के दौरान वह अपने लोगों के लिए मारा गया, परंतु उसने ऐसा नहीं किया। इसके बदले, परमेश्वर ने कहा कि ऐसा जगत की उत्पत्ति के समय से हुआ।

अब हमारे पास यह वाक्य है और अन्य भी है जो कहते हैं कि मसीह जगत की उत्पत्ति के समय से मारा गया और हम यह इस तथ्य के साथ कहते हैं कि वह "**मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है**" और बाइबल स्पष्ट है कि यीशु ने परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपने वचन से संसार की उत्पत्ति की। इसलिए यह दो बातें इस प्रमाण के बड़े हिस्से है कि वह जगत का आरंभ होने से पहले ही मर गया था और फिर जी उठा था। अन्य कुछ वचन भी है, जिसमें यह अन्तर्निहित है। यह अन्तर्निहित है और उसके विषय में कोई प्रश्न नहीं है। लोग इस सिद्धांत के विषय में और अन्य कई सिद्धांतों के विषय में पुराने विचारों में जा रहे हैं। वे आत्मिक बातों के मामले में तेजी से पीछे जा रहे हैं, वे इतिहास के बाइबल आधारीत कॅलेंडर में पीछे जा रहे है; वे दिन या घण्टा जानने के सिद्धांत पर पीछे जा रहे हैं और कई अब सिद्धांत के उस मुद्दे पर कलीसियाओं के साथ सहमत हैं।

पिछली एक विश्वासयोग्य सेवकाई हाल ही में बाहर आई है और उसने कहा है कि जहां तक कलीसिया के युग के अंत के सिद्धान्त की बात है यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है, परंतु महत्वपूर्ण उद्धार है। अब यह एक बुद्धिहीन कथन है। आप कहना चाहते हैं कि परमेश्वर गेंहू को जंगली बीज से अलग करता है यह महत्वपूर्ण बात नहीं है? कलीसियाओं में और मण्डलियों में सुसमाचार के संबंध में परमेश्वर कहता है कि "हण्डे में मृत्यु है," तो क्या यह महत्वपूर्ण नहीं है? क्या यह महत्वपूर्ण नहीं कि महाक्लेश के समय में उस पशु को कलीसिया का राज्य दिया जाता है और पवित्र आत्मा बीच में से निकाल दिया जाएगा? अंतः क्या यह सब कुछ महत्वपूर्ण नहीं है, और जो कुछ महत्वपूर्ण है, वह केवल उद्धार है? जो भी हो, क्या कलीसियाओं में उद्धार नही है यह महत्वपूर्ण नहीं है? यदि लोग कलीसियाओं में है, तो क्या उसमें कोई महत्व नहीं है कि यह बात जानी जाए कि वे ऐसी परिस्थिति में है जहां पर परमेश्वर महाक्लेश काल के दौरान उद्धार नही कर रहा था? यह एक अत्यंत बुद्धिहीन वाक्य है। मैं शायद ही विश्वास

कर सकता था कि एक समय जो विश्वासयोग्य सेवकाई थी वह इस प्रकार की घोषणा करें। यह मानो इस प्रकार कहना है, "यदि लोग अन्य अन्य भाषा में बोलते हैं, तो यह महत्वपूर्ण नहीं है – महत्वपूर्ण जो है वह है उद्धार। परंतु इस सच्चाई के विषय में क्या कि जो लोग अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं वे परमेश्वर के वचन में जोड़ रहे हैं, और इसलिए परमेश्वर कहता है कि पवित्र शास्त्र में लिखी हुई पीड़ाएं उनमें जोड़ी जाएगी?

सिद्धांत महत्वपूर्ण है। सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है और हम इन बातों से बचने का प्रयास नहीं कर रहे हैं और यह कह कर कि कुछ महत्वपूर्ण नहीं है, हम हर एक को प्रसन्न करने का प्रयास नहीं कर सकते केवल इसलिए कि हम जानते हैं कि इस विषय में बहुत विवाद है, इसलिए हम उस विषय में बात नहीं चाहते। मूल रूप से यह विधान यही है : "हम इस विषय में बोलना नहीं चाहते क्योंकि हम न तो इस समूह को दुख पहुंचाना चाहते हैं, और न ही उस समूह को। यदि हम एक बात कहते हैं, तो दूसरा समूह दूसरा दृष्टिकोण रखता है। सिद्धांत महत्वपूर्ण नहीं है, परंतु महत्वपूर्ण जो है, वह उद्धार है ऐसा कहना अत्यंत निर्बल है।

यहां बताया गया है कि परमेश्वर सिद्धान्तों को कितना महत्वपूर्ण समझता है। तीतुस 1:9 में लिखा है :

और विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके; और विवादियों का मुंह भी बन्द कर सके॥

यह सही सिद्धांत है जो ऐसा माध्यम है जिसका उपयोग परमेश्वर विरोध करने वालों को समझाने और यकीन दिलाने के लिए कहता है। फॅमिली रेडिओं के ओपन फोरम कार्यक्रम के विषय में उत्तम बात यह थी कि उसमें बहुत अधिक सही शिक्षा थी। लोग इन गैर–महत्वपूर्ण जानकारी के विषय में फोन करके कलीसिया के युग के अंत के विषय में पूछा करते, और यदि यह महत्वपूर्ण नहीं है, तो मैं यह मानता हूं कि विवाह और तलाक के विषय में भी सिद्धांत महत्वपूर्ण नहीं है। और मैं मानता हूं कि स्त्री का पुरुषों को पवित्र शास्त्र सिखाना महत्वपूर्ण नहीं है और अन्य अन्य भाषाओं में बोलना महत्वपूर्ण नहीं है। एक मात्र महत्वपूर्ण बात उद्धार है। क्या आप एक ऐसे कार्यक्रम की कल्पना कर सकते है जिसमें लोग संवेदनशील मामले के विषय में प्रश्न पूछते हैं और उत्तर है, "यह महत्वपूर्ण नहीं है। जो महत्वपूर्ण है वह है उद्धार। क्या हम अगले प्रश्नकर्ता की ओर जा सकते है?" फिर से, दूसरा व्यक्ति संवेदनशील मामला प्रस्तुत करता है और उत्तर है, "हम वास्तव में उस क्षेत्र में जाना नहीं चाहते। यह महत्वपूर्ण नहीं है। हम अपने अगले प्रश्नकर्ता के पास जाएं और कृपा कर के केवल उद्धार के विषय में चर्चा करें।"

सिद्धांत उद्धार है; सिद्धांत बाइबल की शिक्षा है और जब हम मसीह के सिद्धांत में बने रहते हैं, तब परमेश्वर सही सिद्धांत प्रगट करता है। तब हम उसके उद्धार में बने रहते हैं। यह सचमुच

भयानक और भयंकर है और मैं सचमुच समझ नहीं पा रहा हूं कि यह कहना कितनी मुर्खता है कि कलीसिया के युग के समापन का विषय महत्वपूर्ण नहीं है। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैं यह कहने का साहस नहीं करूंगा कि बाइबल की कोई भी शिक्षा महत्वपूर्ण नहीं है। यह केवल शत्रु के वर्चस्व पाने का एक तरीका है। शत्रु को केवल इस मामले में विजय दिलाने का यह तरीका है। शत्रू का आरंभ करना है और समझाना है और। यदि हम सिद्धांत की चर्चा नहीं करेंगे क्योंकि उसे महत्वहीन के रूप में देखा जाता है, तो फिर बाइबल के सुसमाचार को लाने का कोई तरीका नहीं है – हम सिद्धांत के बिना परमेश्वर के वचन के सत्य को नहीं ला रहे हैं और हम सिद्धांत के बिना सचमुच परमेश्वर के लोगों को नहीं चरा रहे है। सिद्धांत पवित्र शास्त्र की शिक्षा है और यह परमेश्वर के वचन का सत्य है जिस पर प्रभु के लोगों का पोषण होता हैं।

हम वापस भजन की ओर लौटेंगे। हम सीयोन पर्वत की ओर देख रहे थे। अभी हम भजन 69:35 देखेंगे।

क्योंकि परमेश्वर सिय्योन का उद्धार करेगा, और यहूदा के नगरों को फिर बसाएगा; और लोग फिर वहां बस कर उसके अधिकारी हो जाएंगे।

भजन 74:2 में लिखा है :

अपनी मण्डली को जिसे तू ने प्राचीन काल में मोल लिया था, और अपने निज भाग का गोत्र होने के लिये छुड़ा लिया था, और इस सिय्योन पर्वत को भी, जिस पर तू ने वास किया था, स्मारण कर!

यह सीयोन की परिपूर्ण परिभाषा प्रस्तुत करता है। यह खरीदी हुई मण्डली है जिसे परमेश्वर ने छुड़ाया है। हम देखेंगे कि सीयोन यरूशलेम के अंत्यत समान है। परमेश्वर यरूशलेम के विषय में बोल सकता है और उसके चुने हुए लोगों का उल्लेख कर सकता है। पवित्र यरूशलेम या स्वर्ग से उतरने वाली नई यरूशलेम जिसके विषय में प्रकाशित वाक्य में लिखा गया है, इन शब्दों को याद रखे, जब विश्वासियों की मण्डली पूर्ण रूप से तैयार हो गई और परमेश्वर के सारे चुने हुओं ने उद्धार पाया है और तब कहा जाता है कि वे स्वर्ग से उतर आते हैं। परमेश्वर संसार की कलीसियाओं और मण्डलियों का प्रतिनिधित्व करने हेतु सामुहिक रूप से यरूशलेम का उपयोग कर सकता है, परंतु वे सच्चे लोग नहीं है और उन्होंने सचमुच उद्धार नहीं पाया है। यह सीयोन के समान है। हम एक या दो वचन पा सकते हैं जहां पर सीयोन का उल्लेख किया गया है, परंतु सामुहिक कलीसिया दिखाई देती है और सनातन कलीसिया नहीं, जो परमेश्वर द्वारा उद्धार किए गए लोगों से बनी है।

अगले बाइबल अध्ययन में जब हम मिलते है, तब यदि परमेश्वर की इच्छा रही तो हम सीयोन का अध्ययन जारी रखेंगे।

Revelation 14 Series, Study #2 by Chris McCann, originally aired August 13, 2014 **Hindi**

प्रकाशितवाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 2, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारन 13 अगस्त 2014

नमस्कार! इंटरनेट बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य 14 में यह अध्ययन क्रमांक 2 है और हम प्रकाशितवाक्य 14:1 की ओर देख रहे है :

फिर मैं ने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौवालीस हजार जन हैं, जिन के माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है।

हमने पिछली बार देखा कि मसीह निःसंदेह, मेम्ना है और उसका सीयोन पर्वत पर खड़े रहना भजन 2 से संबंध रखता है, जहां यह लिखा है कि वह अपने पवित्र पर्वत पर खडा रहेगा। उसी तरह परमेश्वर भजन 74:2 में सीयोन पर्वत की परिभाषा प्रस्तुत करता है :

अपनी मण्डली को जिसे तू ने प्राचीन काल में मोल लिया था, और अपने निज भाग का गोत्र होने के लिये छुड़ा लिया था, और इस सिय्योन पर्वत को भी, जिस पर तू ने वास किया था, स्मारण कर!

इस प्रकार सीयोन वह नाम है जो परमेश्वर के चुने हुओं से समानता रखता है और भजन 74 में और प्रकाशित वाक्य 14 के हमारे वचन में वह परमेश्वर के चुने हुओं से समानता रखता है। भजन 125:1 में लिखा है :

जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन पर्वत के समान हैं, जो टलता नहीं, वरन सदा बना रहता है।

केवल परमेश्वर के लोग ही यहोवा पर भरोसा करेंगे क्योंकि जब वह हमारे अंदर एक नया हृदय और नया आत्मा डालता है तब प्रभु अपने लोगों को वह विश्वास देता है। हम सीयोन पर्वत के समान होंगे जो सदा बना रहता है। वह परमेश्वर के सनातन राज्य का प्रतीक है।
भजन 132:13 में लिखा है :

क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है, और उसे अपने निवास के लिये चाहा है॥

चुने हुए यह शब्द चुनाव को दर्शाता है। परमेश्वर ने याकूब को चुन लिया, परंतु एसाव से उसने घृणा की, इस प्रकार परमेश्वर ने सीयोन को चुना है, जो उन सभी लोगों का चित्र है जिन्हें जगत की उत्पत्ति के आरंभ से पहले उद्धार के लिए ठहराया गया। उसने उन्हें अपने निवास के लिए चाहा और वह उनमें वास करेगा, बाइबल हमें बताती है। परमेश्वर परमेश्वर के घर के विषय में बोलता है जो उसके निवास के लिए बनाया गया है और इसलिए, परमेश्वर का वह आत्मिक घर जिसके विषय में बाइबल कहती है उसमें प्रत्येक व्यक्तिगत विश्वासी शामिल है जो उद्धार पाया हुआ है और उसे उस घर में जीवित पत्थर के रूप में जोड़ा गया है। इफिसियों 2:21–22 में लिखा गया है :

जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो॥

सीयोन बनाई गई है। सीयोन परमेश्वर का निवास स्थान है और वह इस प्रकार परमेश्वर का मंदिर या घर है, क्योंकि वे सभी इस अर्थ में समानता रखते हैं।

सीयोन के विषय में एक और वचन देखें। भजन 147:12 में लिखा है:

हे यरूशलेम, यहोवा की प्रशंसा करहे सिय्योन !, अपने परमेश्वर की स्तुति कर!

यहां पर हम यरूशलेम और सीयोन के बीच समानता और अदलाबदल देखते हैं। ये वे ही कथन है, जिन्हें फिर से दूसरे शब्दों में कहा गया है ताकि हम बेहतर रीति से समझ सकें कि सीयोन को कैसे उपयोग किया जाता है।

हम वापस प्रकाशित वाक्य 14:2 देखेंगे:

और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना; वह ऐसा था, मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों।

उसके साथ 1,44,000 लोग थे और यह एक विशेष संख्या है। उसका आत्मिक अर्थ है क्योंकि बाइबल की प्रत्येक संख्या एक शब्द है। उदाहरण के तौर पर, जब हम बाइबल में देखते हैं तब हम संख्या को आंकड़ों के रूप में (जैसे कि 1,44,000) नहीं देखेंगे, परंतु हम शब्द देखेंगे

जो कहते हैं "एक सौ चौंआलीस हज़ार।" परमेश्वर ने यह शब्दों में लिखा और बाइबल के हर एक शब्द का आत्मिक अर्थ है। हम हमेशा ही आत्मिक अर्थ नहीं समझ सकते हैं। कुछ अंक हैं जिनके अर्थ हम वर्तमान समय में नहीं जानते। यह स्पष्ट नहीं है। अन्य संख्याएं स्पष्ट हैं और इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने उस पर कुछ जोर और महत्व दिया है ताकि हम वह अर्थ पा सकें जिसे बताने का वह प्रयास कर रहा है। उदाहरण के तौर पर, जब यीशु क्रूस पर चढ़ाया या, तब बार बार "तीन" का आकडा दृष्टी में था। वहां तीन क्रूस थे और क्रूस पर तीन लोग थे, तीन अभिलेख थे, आदि। "तीन" का आकडा बार बार आता है, जैसा कि हम इन तीन में परमेश्वर को इस प्रकार समानता रखते देखते हैं और जब हम बाइबल में पता लगाते हैं, तब हम देखते हैं कि "तीन" के आकडे का आत्मिक अर्थ उद्देश्य को दर्शाना है। यह परमेश्वर का उद्देश्य था कि मसीह क्रूस पर जाएगा; प्रेरितों के काम की पुस्तक में, प्रभु मसीह के विषय में बोलता है कि उसे "**परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार**" क्रूस पर चढ़ाया गया।

1,44,000 यह संख्या विशेष है क्योंकि उसके "12 X 12" ऐसे भाग होते है और फिर हम 1,44,000 पाने के लिए उसमें "10" का आकडा जोडते है, इसलिए वह जो कुछ दिखता है उसकी संपूर्ण परिपूर्णता की ओर संकेत करती है। 1,44,000 परमेश्वर के चुने हुओं को दर्शाते हैं जो मंडलीयुग के दौरान बचाए गए थे। हमने यह यूंही ढूंढ़ नहीं निकाला। हम यह कैसे जानते हैं? हम यह बाइबल से जानते हैं जो हमें किसी अन्य स्थान पर, प्रकाशित वाक्य 7:3–4 में बताता है :

जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुंचाना। और जिन पर मुहर दी गई, मैं ने उन की गिनती सुनी, कि इस्त्राएल की सन्तानों के सब गोत्रों में से एक लाख चौवालीस हजार पर मुहर दी गई।

1,44,000 हमारे लिए गोत्र से विभाजित है जैसा कि अगले कुछ पदों में 12 गोत्रों के नाम पर 12000 प्रति गोत्र आया है इस प्रकार यह "12 ग 12,000" है। इस तरह से यह 1,44,000 की पूर्णता (12 का आंकडा) और संपूर्णता (10 का आंकडा) है जिसके विषय में हमें प्रकाशित वाक्य 14:4 में बताया गया है :

ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैंये वे ही हैं :, कि जहां कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैंपहिले फल होने के लिये मनुष्यों में से ये तो परमेश्वर के निमित्त : मोल लिए गए हैं।

"पहिले फल" अत्यंत महत्वपूर्ण संज्ञा है जो 1,44,000 को पहचानने में हमारी सहायता करती है। यह संज्ञा हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक के 2 रे अध्याय में पिन्तेकुस्त के पर्व की ओर पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने की ओर ले जाती है। इसलिए यह संज्ञा कलीसियाई युग से समानता रखती है और 1,44,000 वे सब हैं जिन्हें परमेश्वर ने बचाया है – 2000 वर्षों पहले स्थापित की गई कलीसिया के दौरान उद्धार पाए हुए हर एक की संपूर्ण परिपूर्णता। कई लोग बचाए गए थे (सन 33 में पिन्तेकुस्त के पहिले दिन 3000 बचाए गए), परंतु हम निश्चित संख्या नहीं जानते। कई सदियों में एक अच्छी बड़ी संख्या संभव थी, परंतु हम जिस विषय में सोचते हैं, वह नहीं। कुछ अनुच्छेदों में परमेश्वर दर्शाता है कि हमने जो अपेक्षा की वह नहीं हो सकता, परंतु लोग बचाए गए थे और इसे 1,44,000 द्वारा प्रतीक स्वरूप दिखाया गया। यह सब इसका प्रतिनिधित्व नहीं करता जिन्हें परमेश्वर ने बचाया है। कुछ लोग यह विचार प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं, परंतु हमें यह याद रखना है कि प्रकाशित वाक्य 7 में, प्रभु इस्राएल के हर 12 गोत्र ों मे से 12,000 लोगों की सूची प्रस्तुत करता है, उसके बाद वह प्रकाशित वाक्य 7:8 में कहता है :

जबूलून के गोत्र में से बारह हजार पर; यूसुफ के गोत्र में से बारह हजार पर और बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई।

उसके बाद, प्रकाशित वाक्य 7:13–14 में, हमें बताया गया है कि बड़ी भीड़ महाक्लेश से आई। जब हम इस बात को समझते हैं, तब हम समझते हैं कि परमेश्वर क्या कर रहा है। 1,44,000 पहिले फल हैं। यदि हम वापस निर्गमन की ओर जाएंगे, तो हम पाएंगे कि निर्गमन 23:16 में लिखा है :

और जब तेरी बोई हुई खेती की पहिली उपज तैयार हो, तब कटनी का पर्ब्ब मानना। और वर्ष के अन्त में जब तू परिश्रम के फल बटोर के ढेर लगाए, तब बटोरन का पर्ब्ब मानना।

कटनी के पर्व के दो भाग थे : पहिले भाग में पहिले फल का पर्व और उसके बाद वर्ष के अंत में बटोरन का पर्व, जो इब्रानियों के सातवें महीने से समानता रखता है जब बटोरन का पर्व झोपड़ियों के पर्व के साथ मनाया जाएगा। उसका आरंभ सातवें महिनें के पंद्रहवे दिन होता है। परंतु फल इकट्ठा करने के दो समय हैं और दोनों को मिलाकर कटनी का पर्व होता है। यदि आपके पास केवल पहिले फल हैं (1,44,000), तो आपके पास पूरी फसल नहीं है। आपको वर्ष के अंत में फलों के अंतिम इकट्ठा किए जाने का इंतज़ार करना है और प्रभु नए नियम में याकूब की पत्री में इस विषय में दूसरे तरीके से बताता है। परमेश्वर को किसान या गृहस्थ कहकर याकूब 5:7 में लिखा है :

सो हे भाइयों, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, देखो, गृहस्थ पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है।

पृथ्वी का अनमोल फल चुने हुए होंगे। दो वर्षाएं क्यों हैं? क्योंकि दो कटनियां हैं। पहिली वर्षा पहले फलों से संबंधित है और वर्णन करती है कि परमेश्वर का वचन कलीसियाई युग के दौरान पूरे संसार में जाकर

1,44,000 को बचाता है। फिर सभी 1,44,000 पर मुहर लगाने के बाद कलीसियाई युग का अंत आता है और महाक्लेश का आरंभ होता है। हम अन्य वचनों से देखते हैं कि प्रभु के पास 2300 सुबह और शाम का अकाल समय था जो पहिले फल के काल के अंत में और अंतिम वर्षा के आरंभ के बीच था। जब तक परमेश्वर ने पहली वर्षा नहीं लाई, तब तक उसने धीरज धरा और उसने कलीसियाओं के द्वारा सारे चुने हुओं को बचाया और उसके बाद उसने अंतिम वर्षा भेजी और उसमें बटोरन के पर्व के दौरान अंतिम फसल इकट्ठा करने का उसका उद्देश्य पूरा हुआ, जो महाक्लेश के 6100 दिनो का अंतिम दिन है, जिसका समापन 21 मई 2011 को हुआ।

वर्षा बंद हो गई, महाक्लेश समाप्त हुआ और न्याय का दिन आ गया। परमेश्वर के पास अब धीरज नहीं है। और जब तक वह फल लाने के लिए वर्षा नही लाता तब तक परमेश्वर अब धीरजवंत नहीं है और ना वह अपने क्रोध को रोककर रखता है। वर्षा हुई है और फल लाया गया है। क्रोध आरंभ होता है, द्वार बंद हो जाता है और सुसमाचार की ज्योंति बूझ जाती है, आदि।

अब जब की हम इन बातों को नही देख सकते, इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर संसार को दंड नहीं दे रहा। इस बात को ध्यान में रखें कि परमेश्वर ने 23 वर्षों तक कलीसियाओं को दंड दिया और कोई भी यह अपनी आंखों से नहीं देख सका। यह आत्मिक दंड था और आप आत्मिक दंड को देख नही सकते। उसे बाइबल से देखने पर आप उसके परिणामों को देख सकते हैं और तब आप कलीसियाओं में पागलपन को देख सकते है और समझ सकते हैं क्यों। और अब हम संसार में वही पागलपन देखते हैं और हम इसका कारण समझते हैं, परंतु हम भौतिक रूप से परमेश्वर के वास्तविक क्रोध को नहीं देख सकते। हम द्वार बंद नहीं देख सकते; हम पूरे पृथ्वी पर सुसमाचार का प्रकाश जाते हुए नहीं देख सकते। परंतु हम जानते हैं कि ये सारी बातें सच हैं क्योंकि परमेश्वर का वचन इस बात की घोषणा करता है।

हम बाइबल का अंतिम अध्याय प्रकाशित वाक्य 22 देखेंगे। प्रकाशित वाक्य 22:3–4 में लिखा है:

और फिर श्राप न होगा और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा, और उसके दास उस की सेवा करेंगे। और उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उन के माथों पर लिखा हुआ होगा।

मुझे लगता है कि मैंने कुछ आगे छलांग लगा ली। यह वचन प्रकाशित वाक्य 14:1 के अंतिम हिस्से के साथ है।

.....और उसके साथ एक लाख चौवालीस हजार जन हैं, जिन के माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है।

प्रकाशित वाक्य 22:4 में जो वचन मैं पढ़ता हूं, वह हमें बताता है कि उसका नाम उनके माथों पर होगा। माथा वह स्थान है जहां पर हमारा मन है और वह मनुष्य की आत्मा के साथ समानता रखता है और पिता का नाम उनके माथे पर होना जो कुछ हम प्रकाशित वाक्य 13 में पढ़ते हैं, उसके विपरीत है, जहां पर कुछ लोगों के माथों पर पशु का नाम था, जो शैतान से समानता रखते थे क्योंकि वे पापों में बिक चुके हैं और शैतान के हैं। उसी तरह परमेश्वर ने अपनी मंडली को चुन लिया है; उसने हमें खरीदा है और छुड़ाया है। उसने हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्राण की भारी कीमत देकर हमें खरीद लिया। अब हम अपने नहीं हैं। हम अपने खुद के नहीं हैं। हम उसके है और उसका नाम हमारे माथों पर लिखा हुआ है। इससे यह दिख पड़ता है कि हमारे पास मसीह का मन है और हम परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहते हैं। परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए एक अखंड इच्छा दी गई है। जब हम इस प्रकार का वाक्य पाते हैं "**जिन के माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है**" तब ये सारी बातें विचाराधीन रहती हैं।

Revelation 14 Series, Study #3 by Chris McCann, originally aired August 14, 2014 **Hindi**

प्रकाशितवाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 3, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारन 14 अगस्त 2014

नमस्कार! इंटरनेट बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 3 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:2 पढने जा रहे है :

और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना; वह ऐसा था, मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों।

यहां पर फिर एक बार हम वही सूचना पाते हैं जो हमने पहले प्रकाशित वाक्य की पुस्तक के हमारे अध्ययन में पाई थी। उदाहरण के तौर पर, कौन बोल रहा है यह हमें स्मरण दिलाने के लिए प्रकाशित वाक्य 1:11 में लिखा है :

कि जो कुछ तू देखता है, उसे पुस्तक में लिख कर सातों कलीसियाओं के पास भेज दे, अर्थात इफिसुस और स्मुरना, और पिरगमुन, और थुआतीरा, और सरदीस, और फिलेदिलफिया, और लौदीकिया में।

उसके बाद प्रकाशित वाक्य 1:14–15 में लिखा है :

उसके सिर और बाल श्वेत ऊन वरन पाले के से उज्ज़वल थे; और उस की आंखे आग की ज्वाला की नाईं थी। और उसके पांव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्टी में तपाए गए हों; और उसका शब्द बहुत जल के शब्द की नाईं था।

यीशु मसीह की आवाज "जल की बहुत धाराओं की आवाज़" के समान है, और यही आवाज़ यूहन्ना फिर एक बार प्रकाशित वाक्य 14:2 में सुनता है :

और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना; वह ऐसा था, मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों।

जल परमेश्वर के वचन के साथ समानता रखता है। सुसमाचार बाइबल है और जो कि बाइबल घोषित करती है, वह सुसमाचार है। यही शब्द यूहन्ना इस प्रकाशित वाक्य में सुनता है जो परमेश्वर उसे दे रहा है। आगे प्रकाशित वाक्य 14:2 में लिखा है:

और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना; वह ऐसा था, मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों।

तो इस प्रकार यह "**जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द**" है। अय्यूब 37:2–5 में लिखा है:

उसके बोलने का शब्द तो सुनो, और उस शब्द को जो उसके मुंह से निकलता है सुनो। वह उसको सारे आकाश के तले, और अपनी बिजली को पृथ्वी की छोर तक भेजता है। उसके पीछे गरजने का शब्द होता है; वह अपने प्रतापी शब्द से गरजता है, और जब उसका शब्द सुनाई देता है तब बिजली लगातार चमकने लगती है। ईश्वर गरज कर अपना शब्द अद्भूत रीति से सुनाता है, और बड़े बड़े काम करता है जिन को हम नहीं समझते।

"बड़े गर्जन का सा शब्द" परमेश्वर की गर्जन का उल्लेख करता है। कोई भी मानवप्राणी ऐसा नहीं है जिसने तूफान के समय गर्जन का शब्द नहीं सुना और यह इतना तेज होता है कि हर कोई कम से कम कुछ क्षणों के लिए रुक जाता है और परमेश्वर की भयानक आवाज़ पर ध्यान देता है – वह परमेश्वर की ओर से आती है, जैसे सारा मौसम भी। परंतु यह परमेश्वर के वचन का रूप है, परमेश्वर के सामर्थी वचन का। आत्मिक क्षेत्र में परमेश्वर का वचन उतना ही सामर्थी है जितना भौतिक क्षेत्र में गर्जन का शब्द।

जैसा कि भजन 29:3–4 में लिखा है :

यहोवा की वाणी मेघों के ऊपर सुन पड़ती है; प्रतापी ईश्वर गरजता है, यहोवा घने मेघों के ऊपर रहता है। यहोवा की वाणी शक्तिशाली है, यहोवा की वाणी प्रतापमय है।

ये सारी बाते समाहित हैं। पवित्र शास्त्र के सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सामर्थी प्रतापमय आवाज़ प्रेरित यूहन्ना सुन रहा है, जब परमेश्वर उसे अपना ईश्वरीय प्रकाशन देता है। वह कई जलाशयों का, प्रभु यीशु मसीह की गर्जना सुनता है। वह बड़ी गर्जना का, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की गर्जना सुनता है। आगे प्रकाशित वाक्य 14:2 में लिखा है:

और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना; वह ऐसा था, मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों।

यह वाक्य कहना लगभग कठिन है, उन नर्सरी के गीतों के समान जहां पर आप क्रमानुसार कई शब्द कहते हैं, जो एक ही शब्द से संबंध रखता है और जीभ के लिए उच्चारण करना कठिन होता है। परंतु यहां पर फिर एक बार, यह परमेश्वर के वचन बाइबल की ओर संकेत करता है। यूहन्ना सुसमाचार सुन रहा है। उसने यह कई जलाशयों के चित्र के माध्यम से सुना और उसने उसे 'बड़े गर्जन' के चित्र के द्वारा सुना और उसने 'अपनी वीणा बजाने वाले वीणावादकों' के चित्र के माध्यम से सुना।

1 इतिहास 25:3 में लिखा है :

फिर यदूतून के पुत्रोंमें से गदल्याह, सरीयशायाह, हसब्याह, मत्तित्याह, थे ही छअपके पिता यदूतून : की आज्ञा में होकर जो यहोवा का धन्यवाद और स्तुति कर करके नबूवत करता या, वीणा बजाते थे।

याद रखें, यह बाइबल है और बिना अर्थ के कुछ नहीं कहती – वह वीणा का संबंध भविष्यद्वाणी करने से जोड़ता है। बाइबल में भविष्यद्वाणी तब होती है जब हम परमेश्वर का वचन बोलते हैं। जब कभी कोई विश्वासी परमेश्वर का वचन बांटता है, वह भविष्यद्वाणी करता है। इसीलिए प्रभु प्रेरितों के काम 2 में कहता है कि तुम्हारे बेटे और बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगे। वह दूसरों को परमेश्वर का वचन बांटने के विषय में कह रहा है; भविष्यद्वाणी करने का यही अर्थ है। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को ईश्वरीय प्रकाशन दिया गया था जो वे कहते थे और बांटते थे। अर्थात, यह कठिन प्रकार था, क्योंकि उस समय भविष्यद्वक्ता का अधिकृत पद होता था जब परमेश्वर अलौकिकता की बाधा तोड़कर अपने सेवक भविष्यद्वक्ताओं को ईश्वरीय प्रेरणा प्रगट करता था। आज परमेश्वर के लोग आत्मिक भविष्यद्वक्ता हैं। हम यशायाह और यिर्मयाह और प्रेरित यूहन्ना और अन्य लोगों के समान अधीकृत पद के अर्थ से भविष्यद्वक्ता नहीं हैं, जो सीधे परमेश्वर से प्रकाशन प्राप्त करते थे। हम उस अर्थ से भविष्यद्वक्ता नहीं हैं

और कोई भी उस अर्थ से भविष्यद्वक्ता नहीं हैं, परंतु हम इस अर्थ से भविष्यद्वक्ता हैं कि परमेश्वर का वचन जो कहता है, उसे हम बताते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम भविष्यद्वाणी करते हैं।

ऐसा लिखा है कि उन्होंने वीणाओं के साथ भविष्यद्वाणी की और वीणा एक सुंदर संगीत वाद्य है जो मधुर स्वर देता है। जब परमेश्वर का वचन घोषित किया जाता है और कहा जाता है, तब वह मधुर और सुंदर स्वर देता है। भजन 49:4 में लिखा है :

मैं नीतिवचन की ओर अपना कान लगाऊंगा, मैं वीणा बजाते हुए अपनी गुप्त बात प्रकाशित करूंगा॥

'दृष्टांत' और 'गुप्त बात' एक ही हैं – वे समानार्थी हैं। बाइबल एक दृष्टांत है क्योंकि उसमें छिपा हुआ सत्य है। परमेश्वर के वचन के स्वरूप में हमें और उसके लोगों को सिखाने के लिए "**सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उन से कुछ न कहता था।**" वह देहधारी वचन था और इसलिए, उसने बिना दृष्टांत के नहीं कहा, अंतः वह हमें यह दिखा रहा था कि हमें किस प्रकार परमेश्वर के वचन बाइबल और भजन 49:4 को समझना है जहां लिखा है, "**मैं नीतिवचन की ओर अपना कान लगाऊंगा**" याद करे यीशु कैसे अक्सर कहा करता था, "**जिस के कान हों वह सुन ले**" और दृष्टांत क्या कहता है यह सुनने के लिए हमें आत्मिक कान दिए जाने की ज़रूरत है। फिर उसने कहा, "**मैं वीणा बजाते हुए अपनी गुप्त बात प्रकाशित करूंगा**" आप फिर से वीणा पर भविष्यद्वाणी करते हैं, आप दृष्टांत की ओर कान लगाते हैं; अर्थात आप पवित्र शास्त्र से सत्य सीखते हैं और फिर आप उसे वीणा पर खोलते हैं – आप दूसरों को सुनाने के लिए उसे घोषित करते हैं या संगीत के रूप में बजाते हैं। फिर से, यह इस बात को कहने का दूसरा तरीका है कि आप पवित्र शास्त्र की घोषणा करते हैं और परमेश्वर का वचन बांटते हैं।

हम यशायाह की ओर आएंगे। यशायाह 24 में, परमेश्वर ने हमें एक अध्याय दिया है जहां पर वह पूरे अध्याय में जगत पर आने वाले दण्ड के दिन का वर्णन करता है। हम उसे पढ़ेंगे नहीं, परंतु हम आपको उसे पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करते हैं और आप 'पृथ्वी' और 'जगत' यह शब्द कई बार पाएँगें वह किसी भी रीति से कलीसियाओं पर केन्द्रित नहीं है। यह ऐसा अध्याय है जिसमें परमेश्वर चाहता है कि हम जाने कि यह जगत के उद्धार न पाए हुओं पर दंड है। यशायाह 24:8 में लिखा है :

डफ का सुखदाई शब्द बन्द हो जाएगा, प्रसन्न होने वालों का कोलाहल जाता रहेगा, वीणा का सुखदाई शब्द शान्त हो जाएगा।

आनंद खत्म हो गया। लूक 15 में लिखा है कि पश्चाताप करने वाले एक पापी के लिए स्वर्ग में आनंद मनाया जाता है। उसका संबंध उद्धार से है। जब परमेश्वर ने पापी व्यक्ति को पश्चाताप का वरदान दिया, तब वह उसका उद्धार कर रहा था। उसने उसे नया हृदय दिया और इसलिए उन्होंने उन सारे हृदय के पापों से पश्चाताप किया जो पत्थर के हृदय से स्वाभाविक रूप से बहा। अब उनके पास नया हृदय है, इसलिए पश्चाताप है और वीणा का आनंद है जिसने परमेश्वर के वचन की भविष्यद्वाणी की और उस भविष्यद्वाणी को सुनकर जब पापी व्यक्ति पश्चाताप करता है, तब स्वर्ग में आनंद होता है। इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड को ढूंढ़ने के लिए और उन्हें खुद की ओर खींचने के लिए और उन्हें बचाने के लिए अपने वचन को संसार में भेजने का परमेश्वर का उद्देश्य था।

परंतु अब वीणा के सुखदाई शब्द का अंत हो जाएगा क्योंकि यह न्याय का दिन है। वीणा अब भी इस अर्थ से बजती है कि परमेश्वर के लोग आज भी परमेश्वर का वचन बोलते हैं, परंतु अब आनंद नहीं है क्योंकि पश्चाताप नहीं है, और इसलिए स्वर्ग में आनंद नहीं है, इस अर्थ से, क्योंकि उस समय के दौरान किसी का भी उद्धार नहीं हो रहा है। परंतु निःसंदेह स्वर्ग में बहुत आनंद है और परमेश्वर की स्तुति हो रही है और हमें स्वर्ग को उदासीभरा स्थान नहीं समझना है, परंतु जहां तक परमेश्वर के उद्धार के कार्यक्रम की बात है, स्वर्ग में एक विशिष्ट आनंद है जब व्यक्ति को सुनने के कान दिए गए और उसने उद्धार पाया : "**विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।**" वीणा का सुखदाई स्वर अब शांत हो जाएगा क्योंकि अब उद्धार नहीं है।

फिर से, हम प्रकाशित वाक्य 14:2 के अंत को पढेंगे :

.....**और जो शब्द मैं ने सुना; वह ऐसा था, मानो वीणा बजाने वाले वीणा बजाते हों।**

वीणा बजाने वाले विश्वासी होंगे या स्वयं परमेश्वर जो भविष्यद्वक्ता है, और इसलिए, निःसंदेह वह भविष्यद्वाणियां करता है। वे अपनी वीणाओं को बजा रहे हैं – यह परमेश्वर के वचन की और परमेश्वर की आवाज जो वचन है, उसका अद्भुत स्वर है। उसके बाद प्रकाशित वाक्य 14:3 में लिखा है:

और वे सिंहासन के साम्हने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के साम्हने मानो, यह नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चौवालीस हजार जनो को छोड़ जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई वह गीत न सीख सकता था।

नए गीत का संबंध उद्धार से है। जी हां, हम यह प्रकाशित वाक्य 5:7–9 में पहले भी देख चुके है :

उस ने आ कर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली, और जब उस ने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के साम्हने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं। और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध हो कर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है।

नए गीत में छुड़ाया जाना शामिल है। हम भजन में नए गीत का संदर्भ कई बार देखते हैं। भजन 40:1–3 में लिखा है :

मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी। 2उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है। और उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे॥

यहां पर दाऊद परमेश्वर की प्रेरणा से लिखता है और कहता है कि वह भयानक गड़हे से निकाला गया और उसके पांवों को प्रभु यीशु नामक चट्टान पर रखा गया, और उसके मुंह में नया गीत डाला गया और 'बहुतेरे यह देखकर डरेंगे।' यह सुसमाचार का गीत है। हम भजन 98:1 में भी पढ़ते हैं :

यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, क्योंकि उसने आश्चर्यकर्म किए है उसके !दाहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उसके लिये उद्धार किया है!

निःसंदेह, यह प्रभु यीशु मसीह के विषय में कह रहा है, जो परमेश्वर का दाहिना हाथ है। उसका पवित्र हाथ उद्धार की ओर और पाप पर और परमेश्वर के राज्य के सारे शत्रुओं पर विजय की ओर संकेत करता है।

हम भजन 144:9–10 में एक और स्थान में देखेंगे :

हे परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊंगा; मैं दस तार वाली सारंगी बजा कर तेरा भजन गाऊंगा। तू राजाओं का उद्धार करता है, और अपने दास दाऊद को तलवार की मार से बचाता है।

परमेश्वर राजाओं को उद्धार देता है और हां, दाऊद इस्राएल का राजा था, परंतु आत्मिक रीति से, जिन्हें परमेश्वर बचाता है उन सब की तुलना राजाओं से की गई है। 'नया गीत' जो 'वीणा

और दस तारवाली सारंगी' बजाकर गाया जाता है, उसका संबंध परमेश्वर के लोगों के उद्धार से है। प्रकाशित वाक्य 14:3 के हमारे वचन में यही बात विचाराधीन है :

और वे सिंहासन के साम्हने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के साम्हने मानो, यह नया गीत गा रहे थे.....

याद करे, वे चारों पशु या जीवित प्राणी स्वयं परमेश्वर का एक स्वरूप हैं। 24 प्राचीन पुराने नियम के 12 सन्तों और नए नियम के 12 सन्तों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और अलंकारिक तौर पर, वे उन सभों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने बचाया है या चुने हुओं का पूरा समाज। उसके बाद आगे प्रकाशित वाक्य 14:3 में वह कहता है :

.....**और उन एक लाख चौवालीस हजार जनो को छोड़ जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई वह गीत न सीख सकता था।**

फिर से इस बात को ध्यान में रखें कि 1,44,000 पहिले फल हैं और वे कलीसियाई युग के दौरान उद्धार पाने वाले सभों के साथ समानता रखते हैं, और इसलिए यह कथन कलीसियाई युग तक और सन 33 से सन 1988 तक की अवधी के दौरान जो जीवित रहते हैं उन लोगों तक सीमित है, जो कलीसियाई युग के संम्पूर्ण 1955 वर्ष है। भजन 140 के अनुसार " **कोई वह गीत न सीख सकता था।** ", जब तक उन्हें उस भयानक गड़हे से बाहर नहीं निकाला गया। दूसरे शब्दों में, आप पहले परमेश्वर के क्रोध के और विनाश के अधीन थे, परंतु जब आपने उद्धार पाया, तब आप उस भयानक गड़हे से निकाले गए और आपके पांव प्रभु यीशु रूपी चट्टान पर रखे गए। अब आप जीवित पत्थर हैं जो उस बुनियाद पर रचे गए हैं और आत्मिक घर का हिस्सा हैं और परमेश्वर आपके मुंह में नया गीत डालता है। उस गीत के परिणामस्वरूप, कई लोग सुनेंगे और प्रभु से डरेंगे; जब आपका उद्धार होता है, तब आप सुसमाचार की घोषणा करने लगते हैं और दूसरे सुनते हैं, वे डरते हैं और उद्धार पाते हैं। कई सदियों तक उद्धार के दिन में परमेश्वर ने इसी प्रकार कार्य किया।

Revelation 14 Series, Study #4 by Chris McCann, originally aired August 15, 2014 **Hindi**

प्रकाशितवाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 4, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारन 15 अगस्त 2014

नमस्कार! इंटरनेट बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य 14 का यह अध्ययन क्रमांक 4 है और हम प्रकाशितवाक्य 14:3–4 पढने जा रहे है :

और वे सिंहासन के साम्हने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के साम्हने मानो, यह नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चौवालीस हजार जनो को छोड़ जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई वह गीत न सीख सकता था। ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैंये वे ही : हैं, कि जहां कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैंये तो परमेश्वर के निमित्त पहिले फल : ए गए हैं।होने के लिये मनुष्यों में से मोल लि

हमारे पिछले अध्ययन में हम 3 रें पद पर चर्चा कर रहे थे। हमने देखा कि कैसे बाइबल उन व्यक्तियों को चित्रित करती है जिन्होंने 'नया गीत गाते हुए' उद्धार का अनुसरण किया, जब वे परमेश्वर के वचन सुसमाचार की घोषणा कर रहे थे। उन चुने हुए 1,44,000 लोगों के अलावा जिनमें परमेश्वर का आत्मा है, कोई भी वह आत्मिक गीत (सच्चा सुसमाचार) को नहीं सीख सकता जो परमेश्वर उन्हें देता है। परमेश्वर सत्य की ओर उनका मार्गदर्शन करता है और वे उस गीत के विषय में बहुत जलन रखते हैं, जो बाइबल है; वे उसमें जोड़ते नहीं और न ही घटाते हैं और वे सिद्धांत के विषय में हर मायने में सावधान हैं।

फिर प्रकाशित वाक्य 14:4 में 1,44,000 के विषय में लिखा हुआ है जो (जो कलीसियाई युग के दौरान उद्धार पाए हुए है) :

ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे है.....

जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "अशुद्ध" किया गया है, वह नए नियम में केवल तीन बार पाया जाता है। एक स्थान में परमेश्वर इस वचन से विवेक के "अशुद्ध" होने के विषय में बोलता है, परंतु एक और स्थान है जहां अर्थ और अधिक स्पष्ट है, प्रकाशित वाक्य 3:4 में :

पर हां, सरदीस में तेरे यहां कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्हों ने अपने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए, वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए मेरे साथ घूमेंगे क्योंकि वे इस योग्य हैं।

यहां पर श्वेत वस्त्र शुद्धता और पवित्रता का चित्र हैं। यह बिना पाप के है और परमेश्वर के चुने हुए अपने सारे पापों से शुद्ध हुए हैं और वह इन पापियों को शुद्ध करता है और उन्हें अपनी दृष्टि में नया बनाता है, बिना दाग और झुरियों के। अब पाप नहीं रहा यह सिखाने के लिए परमेश्वर मुलायम वस्त्र, श्वेत सन के वस्त्र का चित्र या प्रतीक उपयोग कर सकता है, या वह " **जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैं**" जैसे चित्र का उपयोग कर सकता है। वे उसकी दृष्टि में शुद्ध हैं। वे उसकी दृष्टि में पवित्र हैं और वह उनके किसी पाप को नहीं देखता। उनके पाप मिट गए। परमेश्वर की संतान के पाप उद्धार के क्षण उतने ही दूर किए गए जितनी पूरब पश्चिम से दूर है। उन्हें समुद्र की गहराई में डाल दिया गया और बाइलब

कहती है कि उनके पापों का फिर स्मरण न होगा। मैं इस पद को पढ़ूंगा जो अत्यंत सुंदर वचन है। मीका 7:19 में लिखा है :

वह फिर हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को लताड़ डालेगा। तू उनके सब पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा।

ध्यान दें कि यह उनके सारे पाप हैं, केवल उनमें से अधिकतर या 90 प्रतिशत नहीं। परमेश्वर के लोगों के सारे पाप मिट गए। यदि आपने उद्धार पाया है और मैंने उद्धार पाया है, तो इसका अर्थ यह है कि हमारे सारे पाप मसीह पर लादे गए और उन्हें समुद्र की गहराई में डाल दिया गया; उसने उनकी सारी कीमत अदा की। उसके बाद जब "समय" आया तब उस प्रायश्चित के कार्य को हम पर लागू करने की बात थी, क्योंकि हमने इस संसार में जन्म लिया था और सुसमाचार को भेजने का यही उद्देश्य था। उसका उद्देश्य यह था कि उन चुने हुओं को ढूंढ़ना जिन्हें उद्धार के लिए पहले से ठहराया गया था और उनके पाप जगत की उत्पत्ति के समय से प्रभु यीशु मसीह पर डाल दिए गए।

मसीह उनके लिए मेम्ने के रूप में मर गया और अपने चुने हुए लोगों के पापों के लिए पूरा भुगतान करने के बाद वह फिर जी उठा। हम दुगने खतरे के सिद्धांत के विषय में जानते हैं। यदि किसी पर मुकदमा चलता है और वह दोषी पाया जाता है (मसीह के व्यक्तित्व में) और भुगतान किया गया है और न्याय पूरा हुआ है, फिर उस पर उसी अपराध के लिए मुकदमा नहीं चलाया जाएगा। अतः यदि हमने पाप किया है, तो परमेश्वर हमसे भुगतान नहीं चाहता; वह नहीं चाहता कि हम अपने पाप के लिए कुछ बलिदान चढ़ाएं। इसकी कोई ज़रूरत नहीं है और ऐसा करना उसके लिए घृणास्पद होगा क्योंकि केवल एक ही स्वीकार करने योग्य बलिदान है और वह बलिदान जगत की उत्पत्ति से पहले चढ़ाया गया था और परमेश्वर उसी की ओर देखता है। सभी चुने हुओं ने अभी प्रभु यीशु मसीह के बलिदानात्मक प्रायश्चित के कार्य को अपनी आत्माओं पर लागू किया है और जिस व्यक्ति को उद्धार पाना था, उस हर एक ने उद्धार पाया है, इसलिए परमेश्वर ने अपने वचन का उपयोग उस प्रत्येक को मसीह के लोहू को लगाने हेतु किया जिन्हें वह बचाना चाहता था और जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे गए थे। और अब इस समय, इस बात को प्रकाशित करने की बात है, जब परमेश्वर के लोग इस न्याय के दिन से होकर गुजरते हैं, परंतु परमेश्वर के लोगों द्वारा पाप का वास्तविक भुगतान नहीं है क्योंकि वह पहले ही पूरा किया गया है।
परमेश्वर अपने चुने हुओं के ऐसे झुण्ड को देखता है जो अशुद्ध नहीं हुए हैं। वह शुद्धता को देखता है। वह उन लोगों को देखता है जो बर्फ की नाई श्वेत हैं और सभी अपराधों से शुद्ध किए गए हैं और वह अपराधो की भीड़ नहीं देखता। इसलिए कलीसियाई युग के दौरान जो 144,000 बचाए गए हैं, वे उन लोगों का प्रतीक है जो *"स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, परंतु कुंवारे हैं।"*

परमेश्वर ने प्रेरित पौलुस को 2 कुरिन्थियो 11:1 में यह लिखने के लिए प्रेरित किया :

यदि तुम मेरी थोड़ी मूर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता; हां, मेरी सह भी लेते हो। क्योंकि मैं तुम्हारे विषय मे ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिये कि मैं ने एक ही पुरूष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं।

यह उस स्त्री के समान है जो अशुद्ध नहीं हुई है। वह आत्मिक संसार में कहता है कि वह उन्हें प्रभु यीशु मसीह के समक्ष उद्धार पाए हुए लोगों के रूप में मसीह की दुल्हन करके प्रस्तुत करना चाहता है, और उनके सारे पाप मिट गए हैं, और इसलिए वे शुद्ध कुंवारी के समान हैं।

लैव्यव्यवस्था 21 में, परमेश्वर ने महायाजक के लिए एक व्यवस्था ठहराई। लैव्यव्यवस्था 21:10 में लिखा है :

और जो अपने भाइयों में महायाजक हो, जिसके सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया हो, और जिसका पवित्र वस्त्रों को पहिनने के लिये संस्कार हुआ हो, वह अपने सिर के बाल बिखरने न दे, और अपने वस्त्र फाड़े;

फिर लैव्यव्यवस्था 21:13 में लिखा है,

और ये कुंवारी स्त्री से ही विवाह करें...

यह महत्वपूर्ण है क्योंक यीशु महायाजक का प्रतीक है जो साल में एक बार महापवित्र स्थान में जाकर लोहू चढ़ाता है, उसे प्रायश्चित के ढकने पर छिड़कता है जो परमेश्वर की व्यवस्था को ढांकता है। व्यवस्था न्याय की मांग करती है, संतुष्टी की मांग करती है और अपराधियों के लिए मृत्यु की मांग करती है। इस्राएलियों के मामले में, महायाजक पशु के बलिदान के साथ आता है और उसे प्रायश्चित के ढकने पर छिड़कता है और मानो व्यवस्था को अब कुछ नहीं कहना है। यह वह चित्र है और यह कल्पना है जो परमेश्वर प्राणियों के सारे बलिदानों में पूरा करना चाहता था; बलिदानों में, लोहू का बहाया जाना था और लोहू का बहाया जाना न्याय के लिए व्यवस्था की मांग को संतुष्ट करता था। व्यवस्था तोड़ी गई थी। व्यवस्था का उल्लंघन किया गया था और जो कोई परमेश्वर की एक भी व्यवस्था का उल्लंघन करता है, तो वह सारी व्यवस्था का अपराधी हो जाता है और उसका दण्ड मृत्यु है। परंतु यहां पर बलिदान की भेंट हैं : परमेश्वर का मेम्ना जो जगत के पापों को उठा लेता है। उसका लोहू (और लोहू में जीवन है) पापियों के स्थान पर चढ़ाया जाता है जिन्हें परमेश्वर ने उद्धार पाने के लिए ठहराया है, वे सभी चुने हुए और धन्य लोग जो उद्धार के लिए चुने गए थे। परमेश्वर ने उन्हें चुन लिया परंतु गुणों के आधार पर नहीं या उनके कामों के आधार पर नहीं जो उन्होंने किए या कर सकते हैं, परंतु केवल अपनी भली मनसा के आधार पर। उसने याकूब को बचाने का निर्णय लिया (मैंने याकूब से प्रेम किया) और उसने एसाव को न बचाने का निर्णय लिया, और इसलिए लिखा है ''मैंने एसाव को अप्रिय जाना।'' अर्थात, यह सुसमाचार है जो बाइबल प्रस्तुत करती है और यह परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के उद्धार का अद्‌भुत समाचार है।

यशायाह 62:4–5 में लिखा है

तू फिर त्यागी हुई न कहलाएगी, और तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई न कहलाएगी; परन्तु तू हेप्सीबा और तेरी भूमि ब्यूला कहलाएगी; क्योंकि यहोवा तुझ से प्रसन्न है, और तेरी भूमि सुहागन होगी। क्योंकि जिस प्रकार जवान पुरूष एक कुमारी को ब्याह लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे; और, जैसे दुल्हा अपनी दुल्हिन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा॥

इन पदों में परमेश्वर विवाह (जवान का कुंवारी से विवाह) को प्रभु यीशु मसीह से जोड़ता है जो दुल्हा है और अपनी दुल्हन से ब्याह करने वाला है, जो मसीह के सामने पवित्र कुंवारी के रूप में प्रस्तुत की जाती है। लोगों के महायाजक को कुंवारी से विवाह करना होगा और परमेश्वर ने अपना नाम उसकी अपनी व्यवस्था के अधीन रखा है, जिसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने स्वयं खुद को अपनी व्यवस्था के अधीन किया है। परमेश्वर के लिए व्यवस्था का उल्लंघन करना संभव नहीं है और हर एक व्यवस्था महत्वपूर्ण है। व्यवस्था कुछ भी हो, वह कुछ सिखाती है, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की व्यवस्था के समान जो न्याय करने वाले न्यायाधीश के लिए सीमा निर्धारित करती है, जो बताती है कि वह चालीस कोड़ों से अधिक न हो। वह चालीस कोड़े मार सकता है उससे अधिक नहीं; दण्ड की एक सीमा है, और निःसंदेह, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर उस व्यवस्था के अधीन है। इसलिए, जब सारी पृथ्वी का धर्मी न्यायाधीश पापियों को दण्ड देता है, तब उस दण्ड की सीमा होनी चाहिए। क्योंकि परमेश्वर ने व्यवस्था लिखी और खुद को अपनी व्यवस्था के अधीन किया, इसलिए वह किसी को पीटकर और उन्हें असीमित कोड़े नहीं मार सकता। इसी कारण से (और कई कारणों से) **नरक नामक कोई जगह नहीं हो सकती**, जहां पापियों को सदा के लिए अनंत दण्ड मिलता है। कलीसियाएं यही सिखाती है और यह सिद्धांत ईश्वर विज्ञानियों ने तैयार किया है, और तोभी यह व्यवस्थाविवरण 25 के अनूसार गलत है। धर्मी न्यायाधीश होना परमेश्वर के लिए बाइबल की संभावना के क्षेत्र के अंतर्गत आता है, परंतु दुष्ट के लिए सदा के लिए दण्ड देना। जी हां, वह दुष्ट को जो उसकी इच्छा जानता था, कई कोड़ों का दण्ड दे सकता है और अन्य लोगों को कम कोड़ों का। उसने खुद को उस संभावना की अनुमति दी, परंतु सनातन काल में वह अखण्ड दण्ड नही दे सकता है क्योंकि वह उसके द्वारा दी गई व्यवस्था के विपरीत है।

हम वापस प्रकाशित वाक्य 14:4 में जाएंगे :

ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुंवारे हैंये वे ही हैं :, कि जहां कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैंये तो परमेश्वर के निमित्त पहिले फल होने के लिये मनुष्यों में से : मोल लिए गए हैं।

हम इस वचन को देखेंगे : "ये वे ही हैं, जहां कहीं मेम्ना जाता है, उसके पीछे वे हो लेते हैं।" मसीह के पीछे हो लेने की कल्पना परिचित कल्पना है। पीछे जाने के लिए अनुवाद किया गया यूनानी शब्द सुसमाचारों के वर्णनों में 70 से अधिक बार पाया गया है। यही यूनानी शब्द प्रेरितों के काम पुस्तक में 4 बार, पत्रियों में एक बार (1 कुरिन्थियों 1:4) और प्रकाशित वाक्य में 7 बार पाया गया है। नए नियम में यह बंटवारा देखकर मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैंने सोचा कि यह पत्रियों में कई बार मिलेगा, परंतु यह केवल एक बार पाया गया। यह हमारे वचन में पाया गया, *"ये वे ही हैं, जहां कहीं मेम्ना जाता है, उसके पीछे वे हो लेते हैं।"* मैं सुसमाचारों में अन्य कुछ वचन, जो हमें यह स्मरण दिलाते हैं कि यह वचन कहा पाया जाता है।
मत्ती 4:19 में लिखा है।

और उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा।

ये मछुवारे थे जो कुछ प्रेरित बने। यीशु ने उन्हें आज्ञा दी, "मेरे पीछे हो लो," और वे उसके पीछे हो लिए। मत्ती 16:24 में लिखा है :

तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।

यूहन्ना 10:4–5 में लिखा है :

और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उन के आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परन्तु उस से भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानती।

जब हम अपने चारों सुसमाचारों से और प्रेरितों के काम की पुस्तक से दूर हो जाते हैं, तब जब तक कि हम प्रकाशित वाक्य की पुस्तक तक नहीं आते, ''मेरे पीछे हो लो'' यह शब्द केवल एक बार उपयोग किया गया है, और मुझे लगता है कि एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है जहां मेरे पीछे हो लो, यह शब्द पाया जाता है, प्रकाशित वाक्य 19:11–15 में :

फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है। उस की आंखे आग की ज्वाला हैंऔर उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं :; और उसका एक नाम लिखा है, जिस उस को छोड़ और कोई नहीं जानता। और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है और उसका नाम परमेश्वर का वचन है। :और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। और जाति जाति को मारने के लिये उसके

मुंह से एक चोखी तलवार निकलती है, और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा, और वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा।

मुझे लगता है यह बात आप पर वही प्रभाव डालती है, जो उसने मुझ पर डाला। परमेश्वर के लोग मेम्ने का अनुसरण करते हैं। यीशु मसीह ''जहां कहीं'' जाता है, हम उसके पीछे जाते हैं, जैसा कि हमारे वचन प्रकाशित वाक्य 14:4 में लिखा है, "ये वे ही हैं जहां कहीं मेम्ना जाता है, उसके पीछे वे हो लेते हैं।" प्रेरित इसका उत्तम उदाहरण थे। वे मछुआरे थे और यीशु ने कहा, "मेरे पीछे हो लो," और उन्होंने अपना जाल छोड़ दिया और उसके पीछे हो लिए।
परमेश्वर के लोग इस्राएल राष्ट्र से नए नियम के कलीसियाई युग में उसके पीछे हो लिए। परमेश्वर के लोग उद्धार के दिन में और कलीसिया के अंत तक और महाक्लेश के काल में मसीह के पीछे हो लिए। प्रभु के लोग कलीसियाओं के बाहर मेम्ने के पीछे हो लिए क्योंकि परमेश्वर का वचन कहता है कि हमें यहूदीया में भाग जाना है और पहाड़ों पर निकल जाना है इसलिए परमेश्वर के लोग पीछे हो लिए। प्रकाशित वाक्य 19 एक विवरण है जो न्याय के दिन का वर्णन करता है और प्रभु यीशु मसीह शैतान और उसकी सेनाओं के साथ युद्ध लड़ने के लिए जाता है और वहा मसीह है "और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहने हुए उसके पीछे पीछे है।" ये परमेश्वर के चुने हुए हैं, जो अपने पापों से धुल चुके हैं और शुद्ध हुए हैं ताकि अब उन पर कोई पाप न रहा। वे न्याय के दिन की लड़ाई में मसीह के पीछे हो लिए। अर्थात, हमें यह ध्यान में रखना है कि यह किसी भविष्य की घटना के विषय में नहीं बोल रहा जो भविष्य में बहुत दूर है, पंरतु यह वर्णन करती है कि 21 मई 2011 को क्या हुआ और उस दिन से, जब से हम उद्धार के दिन में पृथ्वी पर जी रहे हैं। परमेश्वर ने विजय पा ली, परंतु न्याय का दिन एक लम्बा समय है, इसलिए यह आज भी लड़ाई के लम्बे काल के समान है। प्रभु के लोग उसके पीछे हो लेते हैं। हम परमेश्वर के साथ विवाद नहीं करते। हम प्रभु यीशु मसीह का सामना नहीं करते। हम यह नहीं कहते, "प्रभु जब तक उद्धार है, तब तक मैं आपके पीछे हो लूंगा। बाइबल मेरी पसंद के अनुसार जो घोषित करती है, तब तक मैं आपके पीछे हो लूंगा। मैं इस लड़ाई में आपके पीछे हो लूंगा, परंतु तब तक जब पवित्र शास्त्र का सिद्धांत उद्धार की अनुमति देता है।" यह मसीह के पीछे चलना नहीं होगा, परंतु अगुवाई करने की कोशिश करना है। प्रभु के लोग मेम्ने के पीछे जहां वह कहता है, जाते हैं और मसीह देहधारी वचन है, इसलिए जो बाइबल कहती है, मसीह कहता है। जैसा कि हम परमेश्वर के धर्मी न्याय के विषय में बाइबल से सीखते हैं और उसने उद्धार के दिन अन्य कई महत्वपूर्ण सच्चाइयां प्रगट की हैं, हम उसका आज्ञा का पालन करते हैं और यही युद्ध में मसीह के पीछे हो लेना है।

Revelation 14 Series, Study #5 by Chris McCann, originally aired August 18, 2014 **Hindi**

प्रकाशितवाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 5, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारन 18 अगस्त 2014

नमस्कार! इंटरनेट बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य 14 में यह अध्ययन क्रमांक 5 है और हम प्रकाशितवाक्य 14:5 की ओर देख रहे है : हम प्रकाशित वाक्य 14:5 पढ़ेंगे।

और उन के मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं॥

यह सचमुच सुंदर वचन है जो परमेश्वर ने हमें दिया है क्योंकि जब से आदम और हव्वा का अदन की वाटिका में पाप में पतन हुआ तब से मानवजाति की समस्या छल या धोखा रही है, क्योंकि इस शब्द का अनुवाद छल किया गया है। दोष की समस्या है क्योंकि हमने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया है और उसे तोड़ा है। हमने पवित्र परमेश्वर को दुख पहुंचाया है और परिणामस्वरूप हम पर परमेश्वर का क्रोध प्रगट हुआ है। परंतु परमेश्वर की दया और अनुग्रह और प्रभु यीशु मसीह के विश्वास से परमेश्वर ने उद्धार की योजना तैयार की। इस उद्धार का आरंभ तब हुआ जब जगत की उत्पत्ति के आरंभ से यीशु मसीह बलिदान के मेम्ने के रूप में मारा गया। जगत के संपूर्ण इतिहास में उस निर्माण के पत्थर और चट्टान पर परमेश्वर ने कुछ निश्चित पापियों को बचाने का निश्चय किया।

1,44,000 जिनके विषय में हम प्रकाशित वाक्य 14 में पढ़ते हैं, उन्हें परमेश्वर के लिए पहिला फल कहा गया है, और वे विशिष्ट ऋतु से समानता रखते हैं, कलीसियाई युग का ऋतु। यह समयकाल सन् 33 से सन् 1988 तक 1955 वर्षों तक था। जिसमें परमेश्वर ने संसार के राष्ट्रों से कुछ विशिष्ट लोगों को बचाने के लिए जगत की कलीसियाओं और मण्डलियों का उपयोग किया। उसने कलीसिया की सेवकाई के द्वारा उन्हें वचन के माध्यम से बचाया। कलीसियाओं का एक उद्देश्य था; वे प्रभु यीशु मसीह के आदेश पर कार्य करती थी और उनके पास परमेश्वर का पूरा अधिकार और आशीष थी उस अंश में कि वे परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वासयोग्य थे। परिणामस्वरूप, उन 2000 वर्षों के काल में परमेश्वर जिन व्यक्तियों को उद्धार देने की योजना रखता था, उन्होंने उद्धार पाया।

परमेश्वर ने पहिले फल का उद्धार पूरा किया, परंतु हम उनकी संख्या नहीं जानते। बाइबल उनका प्रतिनिधित्व करने हेतु "1,44,000" के आकड़ों का उपयोग करता है, परंतु कई लाखों लोगों की संभावना है, परंतु हम संख्या नहीं जानते। जब परमेश्वर ने 21 मई 1988 (जब कलीसियाई युग का अंत हुआ) तब उसने संसार की कलीसियाओ और मण्डलियों का न्याय किया। उनके लिए उसकी जो योजना थी, उसे उन्होंने पूरा किया था और तब परमेश्वर के घर से न्याय का आरंभ हुआ। हमने परमेश्वर के समय और ऋतुओं के विषय में और सीखा है, वैसे वैसे हमने सीखा है कि यह कलीसियाओं के लिए होगा। और कई लोगों का उद्धार करने हेतु परमेश्वर उनका उपयोग नही करेगा। वे महाक्लेश के थोडे समयों के लिए रखे जाएंगे जब परमेश्वर कलीसियाओं के बाहर बड़ी भीड़ को बचाएगा और ये अंतिम फल होंगे।

प्रकाशित वाक्य 14:5 का हमारा वचन कहता है, "**और उन के मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं॥**" यहा "मुंह" शब्द पर ज़ोर है और इसमें आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि हम मुंह

से बोलते हैं और परमेश्वर के वचन को घोषित करते हैं। इसका अर्थ यह है कि प्रभु यह दर्शाता है कि ये 1,44,000 चुने हुए लोग विश्वासयोग्यता के साथ और सच्चाई के साथ बोल रहे थे, उस प्रमाण में जिसमें प्रभु ने उनकी समझ को खोला, परंतु हमें यह भी याद रखना है कि कलीसियाई युग के दौरान वचन पर अब मुहर की गई थी (अंत के समय तक) और अंत के समय का आरंभ कलीसियाई युग के अंत में हुआ। पवित्र शास्त्र में अन्य स्थानों में, परमेश्वर कलीसियाई युग की तुलना ऐसे समय से करता है जब मत्ती 13 में गेहूं और जंगली बीज के दृष्टांत में, मनुष्य सो रहे थे और यह बुद्धिमान और मूर्ख (उद्धार पाए हुए और उद्धार न पाए हुए) दोनों को लागू है। इस अर्थ से 'सोने' का समय था जब अभी भी बाइबल मुहर लगाकर गुप्त थी और अधिकतर जानकारी छिपी हुई थी और परमेश्वर के लोगों की समझ से दूर थी। उनके लिए उन बातों को समझने का समय नहीं था जो परमेश्वर ने अंत के समय तक सुरक्षित कर रखी थी। हमें यह नहीं सोचना है कि वे कम विश्वासयोग्य थे। इस विषय में विचार करें : नूह ने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाया और जब हम नूह, या अब्राहम या दाऊद या पुराने नियम के किसी भी पवित्र जन के जीवन की ओर देखते हैं, तो उन्हें बाइबल के सिद्धांन्तों का कितना ज्ञान था? उन्हें आंशिक ज्ञान था, परंतु कई बातों को समझने के लिए उनके पास नया नियम भी नहीं था – उनकी समझ सीमित थी, परंतु परमेश्वर द्वारा प्रगट की गई बातों में और परमेश्वर के वचन के विषय में जिन बातों को वे सत्य समझते थे, उनमें विश्वासयोग्य रहने की उनकी योग्यता पर उसका प्रभाव नहीं पड़ा। परमेश्वर अपने भण्डारियों से यही चाहता है। वह चाहता है कि जो कुछ उसने उन पर प्रगट किया, उन बातों में उसके लोग विश्वासयोग्य रहें। अब इसमें सावधानी की बात है, क्योंकि कुछ लोग कह सकते हैं, "जो मैं समझता हूं, उसमें मैं विश्वासयोग्य हूं," और फिर वे उसे एक बहाने के रूप में उपयोग करते हैं ताकि उस जानकारी को ग्रहण न करें जो परमेश्वर ने हमारे समय में खोली है। यह इस प्रकार नहीं है मानो नूह या मूसा या दाऊद ने जब कई सच्चाइयों का सामना किया, तब वे इन सच्चाइयों से दूर हो गए, उन्हें खारिज किया या नज़रअंदाज़ किया या उनकी उपेक्षा कर उन्हें झिड़क दिया हो। परमेश्वर ने जो कुछ उनसे कहा उन सारी बातों में उन्होंने अपने मन को खोल रखा होगा। परमेश्वर अपने प्रकाशन में जो कुछ उनके लिए ले आया, तब उसे मानने में वे विश्वासयोग्य रहे होंगे।

उसी तरह, कलीसियाई युग के दौरान यह प्रभु के लोगों की समझ के विषय में सच है। उन्हें पुराने नियम के सन्तों से ज्यादा समझ समझ थी। याद रखें कि प्रेरित पौलुस ने इफिसियों 3 में परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा है कि उस पर एक भेद प्रगट किया गया है: स्वर्ग के राज्य में अन्यजाति लोग यहूदियों के संगी वारिस बनेंगे। परमेश्वर ने पुराने नियम में यह विस्तारपूर्वक लिखा था, परंतु उस पर मुहर लगाकर बंद कर रखा और यहूदी लोग (स्पष्ट रूप से) इस विषय में अनजान थे। इस्राएलियों के विश्वासयोग्य विश्वासियों के पास भी वह जानकारी नहीं थी जो उचित समय आने तक उनके मनों पर प्रगट नहीं हुई जहां पर संसार को सुसमाचार सुनाने का समय था। संसार के राष्ट्र अन्यजाति थे। फिर उस समय और काल में परमेश्वर ने उस जानकारी को पौलुस पर प्रगट किया और यह एक महिमामय नए प्रकाशन के सामन था, परंतु यह हमेशा बइबल के पन्नों पर लिखा था।

इसलिए हमें पीछे मुड़कर यह नहीं कहना है, "क्योंकि लोगों के पास कलीसियाई युग के दौरान कुछ सिद्धान्तों की निश्चित समझ नहीं थी (जैसा मसीह का जगत की उत्पत्ति के समय से मारा जाना, या विनाश या कलीसियाओं का न्याय), वे अंत के समय में रहने वाले हम लोगों से कम विश्वासयोग्य थे जब हमारे समय में परमेश्वर ने और सत्य को प्रगट किया है। प्रकाशित वाक्य 14:5 में हमारे वचन के अनुसार, "**और उन के मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं॥**" उनके समय और युग में उन्हें जिन बातों को देकर परमेश्वर प्रसन्न था, उनमें वे विश्वासयोग्य थे। वे उस मुहर को तोड़ नहीं सके जो परमेश्वर ने अपने वचन बाइबल पर लगाई थी, इसलिए परमेश्वर उनसे अपेक्षा नहीं करता था कि उनके पास वह ज्ञान हो और उसने उन्हें विश्वासयोग्यता के एक मानक के लिए ज़िम्मेदार नहीं माना जहां पर उन्हें उन बातों को समझना था जो उनके दिनों में समझना उनके लिए असंभव थी। ज्ञान बाद में बढ़ने वाला था, जैसा कि हम अपने समयों में देखते हैं।

यूनानी शब्द "छल" Strong के शब्दकोश में क्रमांक 1388 पर (dolos) यह शब्द है और नये नियम में यह कई बार उपयोग किया गया है और हम देखेंगे कि वह नकारात्मक रूप से कैसे उपयोग किया गया है। मरकुस 7:20–23 में लिखा है:

फिर उस ने कहा; जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योंकि भीतर से अर्थात मनुष्य के मन से, बुरी बुरी चिन्ता, व्यभिचार। चोरी, हत्या, पर स्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं॥

इस पद में जिस शब्द का भाषांतर "छल" किया गया है वह वही युनानी शब्द है जो "धोखा" यह है। मनुष्य का पत्थर का हृदय छल या धोखे से भरा है जैसा यिर्मयाह 17:9 में लिखा गया है: "**मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है;**" यह उद्धार न पाए हुओं का और स्वभाविक मनुष्य के अपरिवर्तित हृदय का मुख्य गुण है। लोगों का हृदय छल या कपट से भरा हुआ है। मानवजाति अत्यंत कपटी है और कपटी और छली होने का अर्थ वे झूठें हैं और गलत काम करते हैं। यदि सत्य बोलने के लिए उन पर दबाव डाला जाए, तो वे सहज और तुरंत झूठ बोलते हैं क्योंकि यह मनुष्य का स्वभाव है और यह पापी व्यक्ति के हृदय में है: यह अत्यंत दुष्ट है, थोड़ा दुष्ट नहीं: "**सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है**" यदि आप छलपूर्ण और झूठी बातों के विषय में सोच सकते हैं तो आप हृदय को सूची में सबसे ऊपर का स्थान दे सकते हैं। यह अत्यंत छलपूर्ण बात है और इसलिए संसार ज्योति प्राप्त नही करता। इसलिए संसार परमेश्वर की बातों के विपरीत है; इसलिए संसार मसीह के जन्मोत्सव के दौरान सॅन्टाक्लॉज़ की स्तुति करता है; इसी कारण प्रभु यीशु मसीह के पुन्रुत्थान के समय वह ईस्टर बनी को पसंद करता है।

इसलिए संसार बाइबल की बातों को नहीं सुनेगा। अपने स्वभाव के कारण ही, मानवजाति के अंदर यह छल है। इसलिए विकासवाद (Evolution) जैसे तत्वज्ञान पर विश्वास किया जाता है, भले ही ऐसा विवार करना किसी के लिए भी हास्यपूर्ण है जो कहता है कि समय के साथ

वस्तुएं धीरे धीरे उत्क्रांत होती जाती है। जब हम इन सारे पेचीदा प्राणियों का विचार करते हैं और हम आंखों, कानों, चेतनासंस्था और इन सारे प्राणियों के मन या मनुष्यों के मनों का विचार करते हैं, जिन्हें हम स्पष्ट रूप से जानते हैं कि वे सृजनहार द्वारा तैयार किए गए। जब इन बातों को एक साथ जोड़ा जाए या अकेले छोड़ दिया जाए तो कोई सुधार नहीं आता या कोई विकास नहीं होता। इस संसार में जीवन का यह स्पष्ट तथ्य है। संसार के पास विकासक्रम का कोई सबूत नहीं है, परंतु कई वैज्ञानिक और विद्वान उसे एक सत्य के रूप में स्विकार करते है। इसे तथ्य और सत्य के रूप में केवल इसलिए माना जाता है क्योंकि : "**सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है**" वे बाइबल के सत्य को ग्रहण करने के बजाए, अत्यंत मूर्ख और अर्थहीन सिद्धांत को ग्रहण करने के लिए तैयार हैं। बाइबल सारी बातों को समझाता हैः "**आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।**"। यही मनुष्य में (छल) है और इसी वजह से यह इतना सुंदर और महिमामय है जब हम प्रकाशितवाक्य 14:5 जैसे वचन को पढ़ते हैंः "**और उन के मुंह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं॥**" क्या लोगों को मिलकर यह जानना अच्छा नहीं होगा कि उनमें कोई छल नही है? याद रखें कि यूहन्ना के सुसमाचार में प्रभु यीशु मसीह इसी प्रकार के किसी व्यक्ति से मिला। वह नतनयेल से मिला और यूहन्ना 1:47 में लिखा हैः

यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, देखो, यह सचमुच इस्त्राएली हैइस में कपट नहीं। :

यीशु ने ऐसा क्यों कहा, विशेषकर इसलिए कि बाइबल बताती है कि मनुष्य के हृदय से छल या कपट की बात निकलती है? नतनयेल ऐसा व्यक्ति बन सका जिसमे कोई छल नहीं था, इसका कारण केवल यह है कि यदि उसने पहले से नया हृदय और आत्मा पाया था और मनुष्य के हृदय से निकलने वाली सारी बुरी और दुष्ट बातें जा चुकी थी – वे उसमें से निकाली गई थी जिसे परमेश्वर ने बचाया है, क्योंकि वह पत्थर का हृदय निकालकर मांस का हृदय देता है। उस नई आत्मा में जो परमेश्वर उसमें रखता है, छुढ़ाए गए पापी को सिद्धता, पवित्रता और शुद्धता के रूप में देखा जाता है। उसमें कपट नहीं है। जिन्हें परमेश्वर बचाता है, उस सिद्ध उद्धार पाए हुए व्यक्ति में छल या धोखा नहीं होता। नतनयेल परमेश्वर की संतान है, यह इस बात को समझाता है कि जब प्रभु ने खुद का परिचय कराया और कुछ सरल बयान दिए, तब नतनऐल ने फौरन उसकी आज्ञा का पालन किया और उसके पीछे हो लिया। वह समझ गया कि ख्रिस्त मसीह है क्योंकि जिन्हें परमेश्वर बचाता है, उन्हें उनके उद्धारकर्ता मसीह की आवाज सुनने के लिए कान दिए जाते हैं। वे अजनबियों की आवाज नहीं सुनते। नतनयेल ने मसीह की आवाज सुनी और वह जान गया कि यह सत्य की आवाज है। यह मसीह था, परमेश्वर का पवित्र जन।

और कई वचन हैं जो हम देख सकते हैं, परंतु हम 1 पतरस 3:10 देखें :

क्योंकि जो कोई जीवन की इच्छा रखता है, और अच्छे दिन देखना चाहता है, वह अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होंठों को छल की बातें करने से रोके रहे। वह बुराई का साथ छोड़े, और भलाई ही करे; वह मेल मिलाप को ढूंढ़े, और उस के यत्न में रहे।

यहां पर, परमेश्वर अपने लोगों को आदेश देता है कि वे ऐसा मुंह रखें जो छल की बात नहीं कहता। यहां लिखा है, "**अपनी जीभ को बुराई से**" प्रभु चाहता है कि उसके लोग सत्य बोलें : परमेश्वर का वचन जो कहता है, वह बोलें, कम नहीं और ज्यादा भी नहीं और ना जोड़े या ना घटाए, परंतु केवल वही जो परमेश्वर का वचन घोषित करता है। यह परमेश्वर के प्रत्येक संतान की इच्छा और लक्ष्य है जो प्रभु यीशु मसीह का सच्चा आराधक है। हम इस बात की इच्छा करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें हमारे जीवनों में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की इच्छा प्रदान की है। इसका अर्थ यह है कि हम अपने कामों में, हमारे विचारों में और जो कुछ हम कहते हैं उसमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करते है। ये सब महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिसमें हमें परमेश्वर के अधीन रहना हैं। परमेश्वर का वचन जो कहता है उसका उल्लंघन करने या उसे हानि पहुंचाने की हमें इच्छा नहीं है और मैं जानता हूं कि हम इ–बाइबल संगती में हमारी यह अखंड इच्छा है कि हम बाइबल की बातों के प्रति विश्वासयोग्य हों।

हम बहुत अध्ययन करते हैं और उन प्रणालियों का उपयोग करने की कोशिश करते हैं जो प्रभु ने हमें दी हैं अर्थात् वचन की वचन से तुलना करते हैं ताकि सिखाने के लिए पवित्र आत्मा को अवसर दे सकें। जब हम ज्यादा से ज्यादा अध्ययन पूरा कर लेते हैं, तब जो कुछ हमने बाइबल से सीखा है उसे बोलते और बताते हैं। हम यह सिद्ध रूप से नहीं कर सकते, ऐसे स्थान हैं जहां पर हमने उन बातों में सुधार पाया है जो हमने पिछले दिनों में कही और जब हमने पाया कि हम गलत हैं, तब हम सुधार का विरोध नहीं करते। हम सुधार की कामना करते हैं (परमेश्वर के वचन से)।

जिस प्रकार कलीसियाई युग के दौरान परमेश्वर के लोगों को एक अंश तक समझ थी, उसी तरह यह है, परंतु उनकी कुछ समझ पूर्ण रूप से सही नहीं थी और परमेश्वर के वचन से सहमत नहीं थी। परंतु परमेश्वर अपने समय और काल में जिन बातों को अपने लोगों पर प्रगट करता है, उस पर वह नियंत्रण रखता है। पुराने नियम में, एक सीमित समझ थी। कलीसियाई युग में, और समझ थी, परंतु वह भी सीमित थी। क्योंकि बाइबल पर मुहर लगाकर बंद की हुई थी। न्याय के दिन में महाक्लेश के बाद इन दिनों में, हमारे पास और समझ है। हम उससे सीखते हैं और सुधार पाते हैं और जो हम जानते हैं, हम बोलते हैं, परंतु सब समयों में परमेश्वर की हर संतान हमारे सीमित स्वभाव के कारण सीमित है। हम परमेश्वर नहीं हैं, परंतु हम प्रार्थना करके परमेश्वर की प्रणाली का अनुसरण कर सकते हैं और उससे बुद्धि और समझ के लिए बिनती कर सकते हैं। परंतु कुछ बातें हैं जिनकी समझ हमें नहीं है, परंतु प्रभु चाहता है कि हम उन बातों को घोषित करें जिन्हें हम बाइबल से खोज सकते हैं और साबित कर सकते हैं।